# सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

**एडजेसेंट नवनीतिअपार्टमेंट ,आई.पी.एक्सटेंशन,**

**पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२**

**सत्र: २०२५-२६**

| कक्षा:-6 | विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक | पाठ:3 सादगी की मूरत |
|---|---|---|

**मौखिक प्रश्न उत्तर**

**प्र०१) लेखिका कहाँ जा रही थी?**

**उ०) लेखिका अपने घर भागलपुर जा रही थी।**

**प्र०२) राजेंद्र बाबू कहाँ बैठे हुए थे?**

**उ०) राजेंद्र बाबू प्लेटफ़ार्म पर एक बैंच पर बैठे हुए थे ।**

**प्र०३) राजेंद्र बाबू को पहली बार देखने वाले व्यक्ति को क्या अनुभव होता था?**

**उ०) राजेंद्र बाबू को पहली बार देखने वाली व्यक्ति को ऐसा अनुभव होता था कि जैसे उन्हें पहले भी कहीं देखा है ।**

**प्र०४) स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?**

**उ०) स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद जी थे।**

**प्र०५) राजेंद्र बाबू की पत्नी ने लेखिका से क्या लाने को कहा था?**

**उ०) राजेंद्र बाबू की पत्नी ने लेखिका से सिरकी के बने सूप लाने को कहा था ।**

**लिखित प्रश्न उत्तर**

**प्र०१) लेखिका को राजेंद्र बाबू का अभिवादन करने का ध्यान कब आया?**

उ०) लेखिका को राजेंद्र बाबू का  अभिवादन करने का ध्यान तब आया जब उनके भाई ने उन्हें बताया की बेंच पर बैठे सज्जन राजेंद्र बाबू है।

प्र०२) लेखिका ने राजेंद्र बाबू की वेशभूषा का वर्णन किस प्रकार किया है?

उ०) लेखिका ने राजेंद्र बाबू की वेशभूषा की ग्रामीणता का वर्णन करते हुए बताया कि राजेंद्र बाबू ने खादी की मोटी धोती ऐसा फेंटा देकर बाँधी थी कि एक और दाहिने पैर पर घटना छुती थी और दूसरी और बाएँ पैर की पिंडली। मोटे, खुरदरे, काले बंद गले के कोट के ऊपर वाला भाग बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का भाग बटनों से बंद था। सर्दी के कारण पैरों में मोज़ो-जूते तो थे पर एक मौज़ा जूते पर उतर आया था तथा दूसरा टखने पर घेरा बना रहा था। गांधी टोपी की नोक बाईं भौंह पर खिसक आई थी। उनकी वेशभूषा को देखकर लगता था कि वे जल्दी में कपड़े पहन आए हैं इसलिए जो जहाँ अटका रह गया था वह वही उसी स्थिति में अटका हुआ था।

प्र०३) वे कौन-सी बातें थी जो राजेंद्र बाबू के सामान्य व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करती थी?

उ०) राजेंद्र बाबू की मुखाकृति तथा वेशभूषा के समान ही वे अपने स्वभाव और रहन-सहन से भी सामान्य भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे ।प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता के साथ-साथ उन्हें गंभीर संवेदना भी प्राप्त हुई थी, यही वे विशेष बातें थी जो उनके सामान्य व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करती थी।

प्र०४) लेखिका को राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर कब मिला था?

उ०) लेखिका को राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर सन् 1935 में मिला, जब वे कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में इलाहाबाद महिला विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास करने प्रयाग आए थे।

प्र०५) छात्रावास की बालिकाओं के साथ राजेंद्र बाबू की पत्नी का व्यवहार कैसा था?

उ०) राजेंद्र बाबू की पत्नी का छात्रावास की सभी बालिकाओं के साथ बहुत अच्छा व्यवहार था। उन्हें सभी का समान रूप से ध्यान रहता था। वे सभी को बुला-बुलाकर उनका तथा उनके परिवार का कुशल- मंगल पूछना न भूलती थी। इसके साथ ही घर से लाए गए मिष्ठान सभी बालिकाओं एवं वहाँ के नौकर- चाकरों में बाँटे जाते थे।

प्र०६) बालिकाओं के संबंध में राजेंद्र बाबू ने लेखिका को क्या निर्देश दिया था?

**उ०) बालिकाओं के संबंध में राजेंद्र बाबू ने लेखिका को निर्देश दिया था कि वे सामान्य बालिकाओं के साथ बहुत सादगी तथा संयम के साथ रहे। गुरुजनों की सेवा, कमरे की साफ़- सफ़ाई आदि भी उनके अध्ययन का आवश्यक अंग हो । वे अपने खादी के कपड़े स्वयं धो लिया करें। अतः वे जैसे रहती आई हैं, उसी प्रकार रहेंगी।**

**प्र०७) लेखिका के मन में अनेक बार कौन- सा प्रश्न उठता रहता था?**

**उ०) राजेंद्र बाबू के सामान्य परंतु जीवन- मूल्यों की परख करने वाले विलक्षण व्यक्तित्व से पूर्ण रूप से परिचित होने के बाद लेखिका के मन में अनेक बार प्रश्न उठता - क्या वह साँचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन, कोमल चरित्र ढलते थे?**

**मूल्यपरक प्रश्न उत्तर**

**प्र०१) राजेंद्र बाबू के जीवन से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं?**

**उ०) राजेंद्र बाबू के जीवन से हम 'सदा जीवन उच्च विचार' रखने की प्रेरणा ले सकते हैं।**

**प्र०२) 'बिहार के जमींदार परिवार की वधू और स्वतंत्रता संग्राम के अपराजेय सेनानी की पत्नी होने पर भी उन्हें कभी अहंकार न हुआ'- इस पंक्ति से राजेंद्र बाबू की पत्नी की चारित्रिक विशेषता के बारे में क्या पता चलता है?**

**उ०) राजेंद्र बाबू की पत्नी भले ही एक जमींदार परिवार की वधू और राजेंद्र बाबू जैसे स्वतंत्रता सेनानी तथा भारत के प्रथम राष्ट्रपति की पत्नी की परंतु उनके स्वभाव में इस बात का तनिक भी अहंकार नहीं झलकता था।राजेंद्र बाबू की भाँति ही वे भी ज़मीन से जुड़ी हुई महिला थी। वे सबके प्रति ममतामयी, सरल एवं क्षमामयी हृदय की धनी थीं ।राष्ट्रपति भवन में रहने के उपरांत भी वे सामान्य ग्रहणियों की तरह स्वयं भोजन पकाती थीं । ये सब बातें उनके संतोषी स्वभाव तथा सादा जीवन को प्रकट करती है।**